**Chapter – 10 NETAJI KA CHASHMA**

**प्रश्न-अभ्यास**

**(पाठ्यपुस्तक से)**

**प्रश्न 1.**  
सेनानी न होते हुए भी चश्मेवाले को लोग कैप्टन क्यों कहते थे?  
**उत्तर**  
सेनानी न होते हुए भी चश्मेवाले को लोग इसलिए कैप्टन कहते थे, क्योंकि

1. उसके मन में देशभक्ति एवं देश-प्रेम की भावना कूट-कूट कर भरी थी।
2. वह नेताजी के प्रति अपार श्रद्धा रखता था।
3. नेताजी की चश्माविहीन मूर्ति उसे आहत करती थी।
4. वह अपने हृदय में देश के लिए त्याग एवं समर्पण की भावना किसी फौजी कैप्टन के समान ही रखता था। यद्यपि उसका व्यक्तित्व किसी सेनानी जैसा तो नहीं था पर उपर्युक्त गुणों के कारण लोग उसे कैप्टन कहते थे।

**प्रश्न 2.**  
हालदार साहब ने ड्राइवर को पहले चौराहे पर गाड़ी रोकने के लिए मना किया था लेकिन बाद में तुरंत रोकने को कहा-  
**(क)** हालदार साहब पहले मायूस क्यों हो गए थे?  
**(ख)** मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा क्या उम्मीद जगाता है?  
**(ग)** हालदार साहब किस बात पर भावुक हो उठे?  
**उत्तर**

1. हालदार साहब पहले यह सोचकर मायूस हो रहे थे कि कस्बे के चौराहे पर बिना चश्मेवाली सुभाष की मूर्ति होगी। मूर्ति पर चश्मा लगाने वाला कैप्टन मर चुकी है। अब सुभाष की मूर्ति पर चश्मा लगाने वाला कोई न होगा। अब मूर्ति की आँखों पर चश्मा न होगा।
2. मूर्ति पर चश्मा है भले ही सरकंडे का है। इससे पता चलता है कि लोगों में देशभक्तों के प्रति श्रद्धा खत्म नहीं हुई है। हालदार की सोच में सरकंडे का चश्मा किसी बच्चे की सोच का परिणाम है। यह उम्मीद जगाता है कि नई पीढ़ी के बच्चों में भी देशभक्ति एवं देशभक्तों के प्रति आदर एवं श्रद्धा की भावना विद्यमान है।
3. हालदार साहब निराश थे कि सुभाष की मूर्ति पर चश्मा नहीं होगा। परंतु मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा देखकर उनकी निराशा आशा में परिवर्तित हो गई कि बच्चों में भी देशभक्तों के प्रति श्रद्धा विद्यमान है। वे बच्चों में देशभक्ति की भावना देखते हैं। इस बात से वे भावुक हो उठे।

**प्रश्न 3.**  
**आशय स्पष्ट कीजिए-**  
बार-बार सोचते, क्या होगा उस कौम को जो अपने देश की खातिर घर-गृहस्थी-जवानी-जिंदगी सब कुछ होम देनेवालों पर हँसती है और अपने लिए बिकने के मौके ढूँढ़ती है।”  
**उत्तर**  
हालदार साहब लोगों में देशभक्ति की घटती हुई भावना से आहत होकर कहते हैं-जिन लोगों ने देश के लिए अपना संपूर्ण जीवन बलिदान कर दिया है, ऐसे देशभक्तों का लोग उपहास करते हैं। ऐसे लोगों के लिए स्वार्थ ही महत्त्वपूर्ण है। जिसके लिए संपूर्ण मर्यादा त्यागने के लिए तत्पर रहते हैं। आज उन लोगों की कमी नहीं है जो उन देशभक्तों को भी भूल चुके हैं जो अपना घर-परिवार, रिश्तेदार, अपना यौवन यहाँ तक कि अपना जीवन भी कुर्बान कर चुके हैं।

**प्रश्न 4.**  
पानवाले का रेखाचित्र प्रस्तुत कीजिए।  
**उत्तर**  
पानवाला; जिसकी कस्बे के चौराहे पर पान की दुकान है। उस दुकान पर प्रायः हालदार साहब पान खाते हैं। पानवाला स्वभाव से खुशमिज़ाज़ है। वह मोटा तथा काला है। उसके मुँह में पान हुँसा ही रहता है। उसकी भारी-भरकम तोंद है। पान ठुसे रहने से बत्तीसी लाल-काली है। वह वाक्पटु है तथा व्यंग्यात्मक भाषा बोलता है। कैप्टन के बारे में पूछने पर उपहास करता हुआ ही नजर आता है। कहता है कि वह लँगड़ा क्या फौज में जाएगा? वह तो पागल है।

वह सहृदय और भावुक भी है। कैप्टन की मौत हो जाने पर हालदार साहब द्वारा कैप्टन के बारे में पूछने पर पानवाला उदास हो जाता है। उसकी आँखें भर आती हैं।

**प्रश्न 5.**  
“वह लँगड़ा क्या जाएगा फौज में। पागल है पागल !”  
कैप्टन के प्रति पानवाले की इस टिप्पणी पर अपनी प्रतिक्रिया लिखिए।  
**उत्तर**  
कैप्टन के प्रति पानवाले की टिप्पणी उसके संकीर्ण सोच को प्रकट करती है। कैप्टन जो सहानुभूति एवं सम्मान का पात्र था उसी का इस तरह उपहास करना उचित नहीं है। वह अपनी छोटी-सी दुकान से देशभक्त सुभाष की मूर्ति पर चश्मा लगाकर उनके प्रति श्रद्धा प्रकट करता था।

कैप्टन शारीरिक रूप से अपंग और मरियल होते हुए भी देशभक्ति की भावना रखता था। अतः पानवाले की उक्त टिप्पणी निंदनीय है।